Dharmesh nanda, Department of Geography

Govt. Degree College, Bagaha-1 (W. Champaran)

Geography (Hons.), B.A. Part- II

Paper-1

Topic : Bihar - Structure and Relifs

Date 01/06/2021

Time [9:45 - 10:30]

Dharmesh nanda
Assistant Professor (Guest)
BRABU University, Muzaffarpur
(Bihar)

Bihar : Structure and Relief, agricultural regions, industries and Industrial regions

भारत के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित बिहार का क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में 12 वां स्थान है। बिहार का भौगोलिक विस्तार 24° 20' 10" उत्तरी अक्षांश से 27° 31' 15" उत्तरी पूर्वी 83° 19' 50" पूर्वी देशांतर से 88° 17' 40" पूर्वी देशांतर तक है। पूर्व से पश्चिम तक बिहार की चौड़ाई 483 किमी. तथा उत्तर से दक्षिण तक लंबाई 345 किमी. है। बिहार का प्राचीन भूगर्भिक इतिहास चतुर्थ कल्प से कैम्ब्रियन पूर्व कल्प तक फैला है।

उच्चावच की दृष्टि से बिहार को 3 भागों में बांटा जा सकता है –

1. हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र (क्षेत्रफल 580 वर्ग किमी.) 0.06%
2. गंगा का मैदानी भाग (क्षेत्रफल 90,650 वर्ग किमी.) 96.20%
3. दक्षिण का पठारी भाग (क्षेत्रफल 2927 वर्ग किमी.) 3.74%

भौतिक बनावट और संरचना की दृष्टि से बिहार को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है

1. उत्तर का शिवालिक का पर्वतीय भाग एवं तराई क्षेत्र
2. बिहार का विशाल मैदान
3. दक्षिण की सीमांत पठारी प्रदेश

उत्तर का शिवालिक पर्वतीय एवं तराई क्षेत्र – बिहार के उत्तर-पश्चिम में स्थित यह छोटा क्षेत्र है, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 932 वर्ग किमी. है। यह शिवालिक पर्वतीय प्रदेश हिमालय का तृतीय मोड़ माना जाता है। यह टर्शियरी यू

संपलन के फलस्वरूप बना है। इसे तीन उप विभाग में बांटा जा सकता है -

1. रामनगर दून - यह छोटी-छोटी पहाड़ियों का क्रम है जो 214 वर्ग किमी. क्षेत्र पर फैला है यह अधिकतम ऊंचाई 240 मीटर है। यह हरहा नदी घाटी के दक्षिण में है।

2. सोमेश्वर श्रेणी - सोमेश्वर श्रेणी का विस्तार पश्चिम में त्रिवेणी नहर के शीर्ष भाग से भिखनाठोरी तक लगभग 75 वर्ग किमी. में है। इसका शीर्ष भाग बिहार और नेपाल के बीच सीमा के रूप में है। इसकी सर्वोच्च चोटी 874 मी. ऊंचा है। इस क्षेत्र में कई दर्रे है, जो नदियों के बहाव के कारण बने है उनमें सुमेश्वर, भिखनाठोरी और मवात प्रमुख है। इन्हीं दर्रों से बिहार और नेपाल के बीच संपर्क मार्ग बनता है। शिवालिक वलित पर्वत के इन श्रेणियों में नदी द्वारा अपरदन के कारण काफी उबड़-खाबड़ क्षेत्र का विकास हुआ है। इन नई परतदार चट्टानों में मुलायम बलुआ-पत्थर मिलता है।

3. दून घाटी उपर्युक्त दोनों उप-विभाजनों के बीच स्थित है तथा इस घाटी को हरहा नदी की घाटी भी कहते हैं। यह लगभग 24 Km लंबी है एवं गंगा के जलोढ़ मैदान से कुछ ऊंची है।

विशाल मैदान - यह 90,650 वर्ग किमी. में विस्तृत है, जो बिहार के कुल क्षेत्रफल का लगभग 96% है। उत्तरी पर्वतीय प्रदेश और दक्षिण पठारी प्रदेश के बीच फैला बिहार का विशाल मैदान नदियों द्वारा लायी गयी जलोढ़ मिट्टी से बना है जिसका पश्चिमी सीमावर्ती भाग में कहीं-कहीं चूने के कंकड़ का ऊपरी सतह के निकट जमाव पाया जाता है। गंगा नदी के दक्षिणी भाग में सपाट मैदान है और इस मैदान में चौर के ~~मध्य~~

चौर के तरह निचली भूमि ~~समाट मैदान है और इस मैदान~~ पायी जाती है जिसे टाल या ताल कहते हैं। वर्षा ऋतु में यह टाल क्षेत्र जलमग्न रहता है। गंगा के मैदानी क्षेत्र का ढ़ाल एक समान एवं धीमा है, जो 6 सेमी प्रति किमी० है। समुद्रतल से इसका ऊंचाई 60 मीटर से 120 मी० के मध्य है। हांलाकि इसकी औसत गहराई 1000 से 1500 मीटर के मध्य है, परन्तु कहीं-कहीं इससे अधिक भी गहराई पायी जाती है —
(i) गंगा का उत्तरी मैदान (ii) गंगा का दक्षिण मैदान

गंगा के उत्तर में स्थित उत्तरी बिहार का मैदान घाघरा, गण्डक, बूढ़ीगंडक, बागमती एवं कोसी नदियों के बहने का क्षेत्र है। इन नदियों ने इस प्रदेश को अनेक दोआबों में वर्गीकृत कर दिया है जैसे - (i) घाघरा - गंडक दोआब (ii) गंडक-कोसी दोआब (iii) कोसी महानंदा दोआब

उत्तर बिहार का यह मैदान समतल एवं मूलतः एकरूपी हो के बावजूद यहां की प्रवाह प्रणाली के कारण स्थानीय भिन्नता रखता है। बिहार की राजधानी पटना के उत्तर में गंगा नदी से गंडक नदी मिलती है। U.P और बिहार की सीमा पर गंगा से घघरा नदी मिलती है। गंगा नदी के प्रवाह क्षेत्र बाढ़ क्षेत्र की विशेष आकृति के रूप में राज्य में स्थान-स्थान दियारा भूमि दिखाई पड़ती है।

इस मैदान की विशेषताएँ ⟶ यह जलोढ़ पंखी क्षेत्र है जहाँ से नदियां मुड़कर अपना प्रवाह-पथ बदलती रही है। गंगा के उत्तरी मैदान व दक्षिण मैदान का सीमावर्ती भा अपेक्षाकृत ऊंचा है। इन उच्च भूमियों की संख्या पश्चिम में अ है। इस मैदान में पश्चिम चम्पारण जिले में पहाड़ियों के समीपवर्ती भाग में नम तराई क्षेत्र है। इस मैदान के उत्तर

दलदल भूमि की लम्बी पेटी है जिसके मध्य नदी घाटियां तथा ऊंची भूमियां विद्यमान हैं। निम्न भूमि का क्षेत्र दलदली झीलों का बाहुल्य है।

उपर्युक्त आधारों पर गंगा के उत्तरी मैदान को चार भागों में बांटा जा सकता है —

1. भाबर, तराई एवं उपतराई क्षेत्र
2. भांगर या बांगर भूमि
3. खादर
4. चौर एवं मन

तराई क्षेत्र शिवालिक पर्वत श्रृंखला के नीचे पश्चिम से पूर्व की ओर एक संकीर्ण पट्टी के रूप में विस्तृत है। यह एक सपाट आर्द्र क्षेत्र है। तराई क्षेत्र से ठीक सटे दक्षिण उपतराई क्षेत्र जो दलदली क्षेत्र है। तराई क्षेत्र को भाबर क्षेत्र भी कहते हैं। यह सोमेश्वर पहाड़ी के तराई में 10-12 किमी. चौड़ा कंकड़-बालू निक्षेप है।

भांगर (बांगर) भूमि — भांगर भूमि के अंतर्गत प्राकृतिक बांध तथा दोआब मैदान के क्षेत्र आते हैं। पुराने जलोढ़ (भांगर), नये जलोढ़ (खादर) के बीच में एक मध्यवर्ती ढाल मिलता है।

खादर भूमि नवीन जलोढ़ का विस्तृत क्षेत्र है। इसका विस्तार गंडक नदी और कोसी नदी के बीच है। यह क्षेत्र लगभग प्रत्येक वर्ष बाढ़ से प्रभावित होता है। उपजाऊ भूमि होता है।

चौर एवं मन — निम्न भूमि जो वर्षा के समय में पानी से भरा रहता है चौर कहलाता है। नदियों से बने गोखुर झीलों के रूप में पायी जाने वाली आकृति 'मन' कहलाती है।

दियारा भूमि — बाढ़ क्षेत्र की एक विशेष आकृति जैसे गंगा के प्रवाह क्षेत्र में स्थान-स्थान पर मिलते है।

बागमती
कोसी
महानंदा
मोतिहारी
सीतामढ़ी
मधुबनी
गंगा नदी
बक्सर
आरा
गया